SEMESTER – IV

(Development of Indian Theater)

EC – 02

CONTEMPORARY INDIA

(2019 - 2021)

E-Content 05

- Unit – II : Topic

  A. **भारतीय रंगमंच : उद्भव एवं विकास.**

Vetted by :

प्रो0 (डॉ0) सुरेंद्र कुमार

विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 9835463960

डॉ0 विद्यानंद विधाता

अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 9472084115

भारतीय रंगमंच : उद्‌भव एवं विकास

नाटक एवं नाटककार

संस्कृत नाटककारों एवं उनके नाटाकें के अध्ययन के बिना संस्कृत नाटकों के विकास को सही ढंग से समझा नहीं जा सकता। प्रस्तुत पाठ में संस्कृत नाटककारों एवं नाटकों का संक्षिप्त विवरण दिया गया है जो निम्न प्रकार है।

भास

संस्कृत के नाटककारों में भास का नाम प्रथम है जिनका काल दूसरी–तीसरी शताब्दी माना जाता है। भास के कुछ नाटकों की खोज केरल में हुई। टी.गणपति शास्त्री ने भास के तेरह नाटकों की खोज की। भास की प्रमुख रचनाएं निम्नलिखित हैं – (i) प्रतिमा, (ii) अभिशेख, (iii) पंचरात्र, (iv) मध्यम व्यायोम, (v) दूतघटोत्कच, (vi) कर्णभार, (vii) दूतवाक्य, $(viii)$ उरूभंग, (ix) बालचरित, (x) दरिद्रचारूदत्त, (xi) आविमारक, (xii) प्रतिक्षायौगन्धारण तथा $(xiii)$ स्वप्नवासवदत्तम्।

पहली दो रचनाओं का विषय रामायण से, संबंधित है जबकि तीसरी से आठवीं तक का विषय महाभारत से लिया गया है। बालचरित में कृष्ण का चरित वर्णित है। इनकी रचनाओं में नाटक स्वप्नवासवदत्तम् सर्वश्रेष्ठ है, जो उज्जैन के राजा उद्‌यन के प्रेमाख्यानो ंपर आधारित है। इसकी रचना नाटकशास्त्र आधारित रूद्र शैली के अनुरूप नहीं है, इसी कारण इसकी प्रामाणिकता एव विवादित विषय है। संस्कृत नाटककारों में भास सबसे पहले नाटककार हैं जो कालिदास के पूर्ववर्ती हैं। दरिद्र चारूदत्त में

चारूदत्त तथा वसंतसेना की प्रेमकथा है तथा अविमारक में, अविमारक तथा कुंगरी के प्रेम का वर्णन है। अंतिम दो नाटकों का संबंध राजनीतिक जीवन से है जिनमें उज्जैन के राजा उद्यन तथा अवन्तिराज की पुत्री वासवदत्ता के प्रणय प्रसंगों का वर्णन है। इन नाटकों की शैली काफी सरल और सीधी है तथा यह नाट्यशास्त्र के मानको पर आधारित नहीं है। रंगमंच पर इन नाटकों का मंचन आसानी से किया जा सकता है।

अपनी पहली कृति मालविकाग्निमित्रम् में कालिदास अपने महान पूर्ववर्तियों—सौमिल्ल, कविपुत्र और भास के नाम का उल्लेख करते हैं। भास ने जिस प्राकृत का प्रयोग किया है वह कालिदास द्वारा प्रयुक्त किए गए प्राकृत से पूर्वकालिक है। भास असंदिग्ध रूप से अश्वघोष के परवर्ती है परन्तु भास अवश्घोष की अपेक्षा कालिदास के ज्यादा समीप है। भास के नाटक में रामायण तथा महाभारत दोनों महाकाव्यों का प्रभाव देखा जा सकता है।

भास के नाटकों की संख्या और विषयों की विविधता से उनकी क्रियाशीलता तथा मौलिकता सूचित होती है। महाभारत पर आधारित कृतियों में अधिक उद्भावना और रोचकता दिखाई देती है। बालचरित भास की प्रतिभा की मौलिकता स्पष्ट करता है। नाट्यालंकार के रूप में नृत्य का प्रयोग भास की रचनाओं में प्रायः किया गया है। इनकी शैली रामायण—महाभारत से प्रचलित है।

भारत में नाट्य साहित्यों की शुरूआत भास से होती है। भास के कई प्रकार के नाटकों को देखकर कहा जा सकता है कि संस्कृत नाटक अपनी उत्पत्ति के उच्च स्तर को प्राप्त कर चुका था। भास ने वीर रस का

सर्वाधिक अच्छा प्रयोग अपने नाटकों में किया। कालिदास के नाटकों में श्रृंगार की प्रचुरता दिखती है जिसे उत्तेजक संवेदनाओं के साथ व्यक्त किया गया है।

कालिदास

समस्त संस्कृत नाट्य साहित्य में सर्वाधिक प्रसिद्ध नाम कालिदास का है। अधिकांश विद्वान कालिदास का समय भास के बाद का मानते हैं। सर्वाधिक प्रसिद्ध लोककथा के अनुसार कालिदास विक्रमादित्य के समकालीन थे और उसकी सभा के नौरत्नों में से एक थे। विद्वानों में विक्रमादित्य के समय को लेकर गहरा मतभेद है परंतु अधिकांश ने कालिदास को गुप्तकाल में मानने का अनुमोदन किया है। कालिदास उन्नत काव्यरूप की संस्कृत शैली की सर्वोच्चता का प्रतिनिधित्व करते हैं। भास और शूद्रक की भॉति कालिदास सरल हैं, परंतु इनमें जो लालित्व व परिष्कार है वह अन्य दोनों लेखकों में नहीं दिखाई देता है।

कालिदास का वर्णन सातवीं सदी के लेखक बाणभट्ट की सुप्रसिद्ध रचना हर्षचरित में मिलता है। कालिदास का वर्णन 634 ई. के ऐहोल के जैन मंदिर के अभिलेख में भी मिलता है। कालिदास संबंधित कई लोककथाओं का वर्णन 16वीं सदी के बलाल कवि की रचना भोज प्रबंध में मिलता है। कालिदास ने अपने अभिज्ञानशाकुंतलम् में राजा विक्रमादित्य को अपने संरक्षक के रूप में वर्णन किया है। कई विद्वानों का यह मानना है कि विक्रमादित्य गुप्त राजवंश का शासक चंद्रगुप्त द्वितीय है जिसने 380 ई. से 413 ई. तक शासन किया तथा विक्रमादित्य की उपाधि की थी। कालिदास की मालविकाग्निमित्रम् नाटक शुंग इतिहास पर आधारित

है। इसको छोड़कर कालिदास के अन्य नाटकों का विषय धार्मिक (महाकाव्य और पुराण पर आधारित) है। कालिदास का अभिज्ञानशाकुंतलम्, साहित्य व नाट्य की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ कृति है। इसकी कथा महाभारत से ली गई है जिसमें राजा दुष्यंत और मानवी अप्सरा शंकुतला के मिलन को दर्शाया गया है। प्रणय दृश्यों का प्रस्तुतीकरण मौलिक और प्रभावशाली है। मालविकाग्निमित्रम् पॉच अंकों का नाटक है।

भवभूति

भारतीय नाटककारो में कालिदास के बाद दूसरा महत्त्वपूर्ण स्थान भवभूति का है। भवभूति ने अपनी प्रस्तावनाओं में बताया है कि वे उदुंबर नामक ब्राह्मण परिवार में उत्पन्न हुए थे, जो विदर्भ के अंतर्गत पद्यपुर के निवासी थे। उनका पूरा नाम श्रीकंठ नीलकंठ था और वे कश्यप गोत्र के हैं। वे व्याकरण, काव्यशास्त्र तथा न्याय के ज्ञाता थे। इनकी पहली रचना महावीरचारित है। उत्तररामचरित सबसे बाद की रचना है। नाटक के रूप में उत्तररामचरित उच्चतर स्तर तक नहीं पहुॅचता। इनका विषयक्षेत्र काफी सीमित है। उन्होंने अपने को शौरसेनी तक सीमित रखा है और अपनी रीति का संस्कृत के आदर्शों पर ढाला है। प्राकृत में जटिलता है। इनका उत्तररामचरितमानस नाटक, महाकाव्य रामायण पर आधारित है। भवभूति का समय आठवीं सदी के पूर्वार्द्ध का है परंतु इनके जीवन के बारे में बहुत कम जानकारी मिलती है। ऐसा कहा जाता है कि इन्हें कन्नौज के शासक यशोवर्मन का संरक्षण प्राप्त था। भवभूति ने तीन नाटकों की रचना की (i) मालतीमाधव, (ii) महावीरचरित तथा (iii) उत्तररामचरित। मालतीमाधव एक प्रेम कथा है जिसमें श्रृंगार रस की प्रधानता हैं महावीरचरित छः अंकों

वाला नाटक है जो राम के जीवन पर आधारित है। रामायण की घटनाओं को नाट्य रूप देने में कवि काफी सफल साबित हुआ है। उत्तररामचरित भवभूमि की सर्वश्रेष्ठ रचना है। इस नाटक का मूलस्रोत रामायण का उत्तरकाण्ड है। इसमें कुल सात अंक हैं। भवभूति के नाटकों में विदग्धता तथा पांडित्य का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। मानव के सूक्ष्म भावों से लेकर प्रकृति के वीभत्स दृश्यों के अंकन में उन्हें महारत हासिल है। उत्तररामचरित में भाषा की प्रौढ़ता, वाणी की उदारता तथा अर्थ की गंभीरता का समन्वय देखने को मिलता है। करूण रस का प्रयोग इन्होंने बखूबी किया है।

शूद्रक

शूद्रक द्वारा चरित मृच्छकटिकम् कई कारणों से अनोखा एवं प्रसिद्ध नाटक है। स्वयं मृच्छकटिकम् के रूपक में राजा शूद्रक को उसका रचयिता बताया गया है और उनकी शक्तियों का अद्भुत विवरण दिया गया है। अन्रू कई स्रोतों से उनके व्यक्तित्व की कई जानकारियॉ प्राप्त होती है। राजतरंगिणी, स्कंदपुराण, आंध्रभृत्य, वेतालपंचविंशति, कथासरित्सागर, हर्षचरित, दशकुमारचरित, रोमिल और सोमिल की कथा में राजशेखर की रचनाओं में शूद्रक का उल्लेख मिलता है, परंतु अन्य संस्कृत नाटककारों की भॉति इसके बारे में कोई प्रामाणिक जानकारी नहीं मिलती है। इसमें कुल दस अंक हैं और इसमें दरबारी तथा महाकाव्यों की परंपरा को तोड़कर समाज के निम्न वर्ग के लोगों को अपना पात्र बनाया है जो शोषणवादी शासन के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद करते हैं। नाटक के पात्रों द्वारा बोली गई प्राकृत में प्रादेशिक विभिन्नता है जो वास्तविक जीवन

के अनुरूप जान पड़ती है। नाटक के अंकों में एकसूत्रता है जो अच्छे अभिनय के लिए उपयुक्त है। सामाजिक नाटकों में इस नाटक का विशेष स्थान हैं। मृच्छकटिकम् में कुल सत्ताइस पात्र हैं और इसके गौण पत्रों का भी अपना व्यक्तित्व है। भारतीय नाटक में यह बात विरल है।

विशाखदत्त

विशाखदत्त ने दो प्रमुख नाटकों मुद्राराक्षस तथा देवीचन्द्रगुप्तम् की रचना की। देवीचंद्रगुप्त नाटक अपने मूल रूप में नहीं मिलता बल्कि इसके कुछ अंश नाट्यदर्पण में प्राप्त होते हैं। मुद्राराक्षस में चंद्रगुप्त मौर्य तथा देवीचंद्रगुप्तम् में रामगुप्त की जीवनसंबंधी घटनाओं को नाटक में ढाला गया है। दोनों नाटक वीर रस प्रधान हैं। मुद्राराक्षस में सात अंक हैं।

मुद्राराक्षस संस्कृत के महान नाटकों में से एक है। नाटक की विषयवस्तु राजनीति से ओतप्रोत है। मुद्राराक्षस की संस्कृत परंपरा प्रतिष्ठित है। तीन प्रकार के प्राकृतों का भी प्रयोग किया गया है। इतिहासकार मौर्य शासक चंद्रगुप्त के सिंहासनारूढ़ होने का समय 322 ई. पू. मानते हैं।

संदर्भ– सूची

1. दामोदर धर्मानंद कोसांबी, प्राचीन भारत की संस्कृति एवं सभ्यता, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1990

2. रोमिला थापर, पूर्वकालीन भारत (प्रारंभ से 1300 ई. तक), हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निर्देशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 2008